नागराज और ड्रैकुला

जीतिए
लाखों रुपयों के उपहार। इस विशेषांक में है
नागराज मेगा कांटेस्ट का प्रवेश पत्र

राजनगर को महानगर से जोड़ने वाला ये सुपर हाइवे वैसे तो काफी व्यस्त रहता है! लेकिन आज इस पर ट्रैफिक 'न' के बराबर है-
क्योंकि राजनगर पर हुए ड्रैकुला के हमले के बाद महानगर वाले राजनगर जाना नहीं चाहते और राजनगर वाले वैम्पायरों के आतंक के कारण घर से बाहर आना नहीं चाहते-
इसलिए आज इस सड़क पर कोई भी ऐसा नहीं है जो राजनगर से महानगर की तरफ जा रही इस घायल महिला को 'लिफ्ट' देकर अस्पताल पहुंचा सके-
Ankur's UPload
नागराज और ड्रैकुला
संजय गुप्ता की पेशकश
कथाः जॉली सिन्हा
चित्रः अनुपम सिन्हा
इंकिंगः विनोदकुमार
सुलेख व रंगः सुनील पाण्डेय
सम्पादकः मनीष गुप्ता
या शायद मदद जीप पर चढ़कर आ रही है-
तुमको आतंकवादियों की कैद में जो मानसिक यंत्रणा हुई होगी...
...उसी से तुमको मुक्ति दिलाने के लिए मैंने बच्चों के साथ पिकनिक का प्रोग्राम बनाया है!
011#17
इस संदर्भ में विस्तृत रूप से जानने के लिए पढ़ें ड्रैकुला का हमला।
1
©RAJA POCKET BOOKS
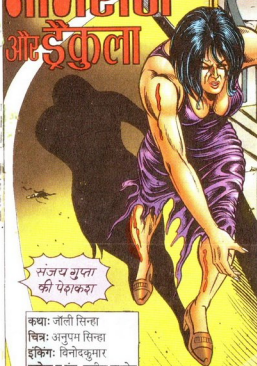
नागराज की यात्रा के बारे में जानने के लिए पढ़ें ऐलान-ए-जंग, काली मौत, नागराज अमेरिका में और आतंकवादी नागराज
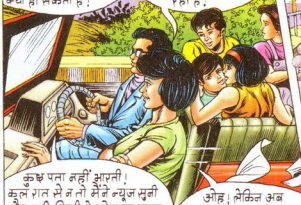
लेकिन एक बात समझ में नहीं आई! मैंने इसको जितना पानी पिलाया था, इसने वह सारा का सारा मुंह से बाहर निकाल दिया!
इतनी थकान में तो इसको बहुत तेज प्यास लगी होनी चाहिए!
राज और भारती को किसी खतरे की आशंका नहीं थी-
लेकिन खतरा तो आने वाला था-
तूने गेंद गड्ढे में गिराई है! अब तू ही इसे निकाल!
अभी ले!
ठीक कहते हो! जब ये होश में आ जाए तो इससे इसका कारण पूछ लेना! फिलहाल तो ये कहीं जा नहीं रही है!
बच्चे भी खेल रहे हैं! इसलिए हम भी वह काम कर लें जो हम यहां पर करने आए हैं! टेंशन दूर करने का काम! चलो टहलते हैं!
बच्चे को आभास नहीं था कि गड्ढे के किनारे की रेत काफी ढीली है-
बंटी!
बंटी गड्ढे में गिर गया है!
ओ गॉड! मैं अभी उसे बचाता हूं! अरे! वह औरत होश में आ गई है!...
...और वह बंटी को बचाने के लिए गड्ढे में कूद पड़ी है!
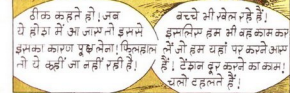
मैं निकालता हूं तुम दोनों को! पकड़ो मेरा हाथ... अरे! ये गड्ढा तो मेरे अनुमान से कहीं ज्यादा गहरा है! नीचे अंधेरे में कुछ नजर नहीं आ रहा है!...
कड़ कड़कड़
गड़ड़
...और... और अंदर से अजीब-अजीब सी आवाजें आ रही हैं! मुझे कुछ खतरा लग रहा है! मैं भी नीचे जा रहा हूं भारती!
राज गड्ढे में उतरा तो बहुत धीरे था-
लेकिन बाहर बहुत तेजी से आया-
लेकिन नागराज को इस मुसीबत से निपटकर बंटी और उस महिला को सुरक्षित बाहर लाना ही होगा!
वह औरत बेहोशी में 'वैम्पायर' और 'हमला' जैसे शब्द बड़बड़ा रही थी!
ओ माई गॉड!
क्या हुआ राज?
अंदर कोई बड़ी जबरदस्त शक्ति मौजूद है, भारती!
मुझे अभी तो अंधेरे में कुछ नजर नहीं आया!
कहीं इस हादसे के पीछे वैसी ही किसी शक्ति का हाथ तो नहीं है!

... अब आंखें अंधेरे में थोड़ा-थोड़ा देख सकने की अभ्यस्त हो रही हैं! आवाजें इस तरफ से आ रही हैं! मुझ पर वार करने के बाद वह प्राणी इधर ही भागा होगा!

पता नहीं इन गुफाओं के जाल में किस तरह का प्राणी रहता...

... अरे!

ये... ये तो वही औरत है जो बंटी को बचाने के लिए नीचे कूदी थी! लेकिन इसके दांत जानवरों की तरह नुकीले कैसे हो गए?

और... और इसका रूप भी बदल गया है!

ये बंटी का खून पीना चाहती है! यानी ये औरत वास्तव में एक वैम्पायर है! जिसका अंधेरे में आते ही रूप बदल गया है! मुझ पर वार भी इसी ने किया होगा!

लेकिन मैंने तो सुना है कि वैम्पायर सूर्य की किरणों को सह नहीं सकते! फिर ये औरत धूप में आराम से कैसे घूम रही थी?
अब सूर्य की किरणें हमें परेशान नहीं करतीं! बल्कि उन किरणों के कारण दिन में हमारा रूप सामान्य बना रहता है! सच पूछो तो वे किरणें अब हमारी मदद करती हैं!...
...आऽऽऽह!
तूने मेरी प्यास बुझने नहीं दी! मेरे शिकार को मेरे हाथों से छुड़ा दिया! अब इसका अंजाम तुझे अपना खून देकर भुगतना होगा!
तेरा खून पीकर अपनी प्यास बुझाऊंगी मैं!
मेरा खून पीकर तुम अपनी प्यास नहीं...
...बल्कि अपने जीवन की जोत को बुझा लोगी!
इसलिए मेरा एहसान मानो कि मैं तुमको अपने पास पहुंचने से रोक रहा हूं!
तुम इस सर्प रस्सी के सहारे 'बीच' पर चले जाओ बंटी, और जाकर भारती दीदी से कहना कि वे बच्चों को लेकर यहां से तुरन्त चली जाएं! राज अंकल का इंतजार न करें!
आऽऽऽह! चुस-चुस! प्यास लगने पर इंसान अगर गंदे नाले का पानी पी सकते हैं, तो मैं क्या इन सांपों का सड़ा खून नहीं पी सकती!
ओ.के. नागराज!
एंड थैंक्स!

अब बंटी सुरक्षित है! और मैं इससे खुलकर लड़ सकता हूं!
मुझसे बाद में लड़ना! पहले अपनों से लड़ लो!
अपनों से लड़ने का मतलब अपने सांपों से ही लड़ना है!
लेकिन क्यों? मेरे सांप मुझसे ही क्यों लड़ेंगे? ओह समझा!
इसके काटने से मेरे सांप 'वैम्पायर सर्प' बन गए हैं! और अब ये मुझ पर हमला कर रहे हैं! मुझे इनसे बचना होगा! क्योंकि अगर इन्होंने मुझे काट लिया तो शायद मुझमें भी वैम्पायरों के लक्षण प्रकट होने लगेंगे!
नागराज अपने ही सांपों से बचने में इतना उलझा हुआ था -
कि उसके पास उस वार से बचने का कोई मौका नहीं था -
आऽऽऽह!
तूने मुझे सतर्क कर दिया है!
अब मैं तेरा खून नहीं पिऊंगी!
बल्कि तेरा खून बहाऊंगी! ताकि आज के बाद तू मेरा रास्ता कभी न रोक पाए!

अरे! दूसरा घाव लगने से पहले ही तेरा पहला घाव भर जाता है!

हां! लेकिन जो घाव मैं तुझे लगाने वाला हूं, वे नहीं भरेंगे!

और अब मैं तुझ पर सर्पों से वार करने की गलती भी नहीं करूंगा!

लेकिन ऐसे मैं कब तक बचता रहूंगा! इसको खत्म करने का कोई न कोई रास्ता तो ढूंढ़ना ही होगा!

अरे! ये मैं क्या सोच रहा हूं! मुझे इसको मारना नहीं है काबू में करना है!

नागराज के उस वार ने वैम्पायर को सुरंग की तरफ उछाल दिया-

क्योंकि मैं इसको एक सामान्य महिला के रूप में देख चुका हूं! मैं इसकी जान लेने की कोशिश तक नहीं कर सकता! लेकिन इसको वश में करूं तो कैसे?

अरे, हां! पानी! वैम्पायरों को भी सांस लेने की जरूरत तो पड़ती ही है! इसको पानी के अंदर ले जाना होगा!

और सुरंग से फिसलती हुई वह वैम्पायर, पानी के अंदर आ गिरी-

अब मुझे इसको किसी न किसी तरह से पानी के नीचे ही रोककर रखना है!

... तब तक, जब तक इसके फेफड़ों से सांस खत्म न हो जाए! ...
और ऐसा होने में ज्यादा वक्त नहीं है!
अगले ही पल लेडी वैम्पायर के दांत, पास से गुजरते छोटे ऑक्टोपस के बदन पर धंस गए–
और नागराज को अपना शिकंजा खोलने पर मजबूर हो जाना पड़ा–
हे देव कालजयी! इसके काटते ही ये छोटा सा ऑक्टोपस विशालकाय वैम्पायर बनकर मुझ पर हमला कर रहा है!
आऽऽऽह! मुझे हवा चाहिए! दम घुट रहा है!
पर ये इंसान मुझे सतह तक जाने नहीं देगा! इसको शिकंजा खोलने पर मजबूर करना होगा!
अब तू इससे निपट मानव! मैं सतह तक जाकर फेफड़ों में हवा भरकर आती हूं!

ओफ़! लेडी वैम्पायर तो मेरी चाल मुझ पर ही आजमा गई!
पहले मैं उसको पानी के अंदर रोककर उसको बेहोश करना चाहता था, पर अब उसका गुलाम ये वैम्पायर ऑक्टोपस मुझे पानी में डुबोकर मेरा दम घोंट रहा है!
और अब ये अपने दांत मेरे शरीर में गड़ाकर मुझे भी वैम्पायर बनाना चाहता है! और इसको मैं यह नहीं समझा सकता कि भाई ऑक्टोपस, मुझे काटोगे तो गल जाओगे!
अब मैं ज्यादा देर तक इसे नहीं रोक पाऊंगा! सांस की कमी से मेरी शक्ति खत्म होती जा रही है, और जल में होने के कारण इसकी शक्ति बरकरार है! इसकी शक्ति खत्म करने का एकमात्र उपाय इसको पानी से बाहर ले जाना है! लेकिन मैं ऐसा करूं तो कैसे करूं? मुझमें तो इसका शिकंजा खोलने तक की ताकत नहीं बची है! और मेरी मदद करने वाला यहां पर कोई नहीं है!... या है?... है! सर्प रस्सी की मदद लेनी होगी!
सर्प रस्सी नागराज की कलाई से निकल कर, पानी से बाहर चली गई–

कुछ ही पलों के अंदर सर्परस्सी का दूसरा छोर 'वैम्पायर ऑक्टोपस' के एक तंतु को जकड़ चुका था-
अब बेहोशी की कगार तक पहुंच चुके नागराज को सिर्फ उस पल का इंतजार था-

जब सर्परस्सी से बंधी वह चट्टान लुढ़कती हुई पानी के अंदर आ गिरे-

और नागराज के साथ-साथ, ऑक्टोपस का शरीर भी खिंचता हुआ पानी के बाहर आ पहुंचे।
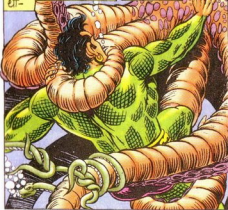
नागराज का नागशक्ति से भरा हुआ एक ही शक्तिशाली वार सांस के लिए तड़पते ऑक्टोपस को बेहोश करने के लिए काफी था-
ये... ये कैसे हो गया? तू पानी से बाहर कैसे आ गया?
ये आसान सा काम था! खासतौर से जब मेरे पास एक ऐसी रस्सी हो जो मेरे इशारों पर सोच-समझ कर खुद काम कर सकती हो!

मेरी सर्प रस्सी ने पानी से बाहर निकलकर पहले सुरंग की छत पर लटकी एक बड़ी चट्टान को ढूंढकर उसको अपने शिकंजे में कस लिया, और फिर उसको छत से चिपकाए रखने वाले चट्टानी टुकड़ों को खोदकर चट्टान को नीचे गिरा दिया! और जब वह चट्टान पानी में गिरी तो उसने लिफ्ट की तरह सर्प रस्सी के दूसरे छोर में फंसे ऑक्टोपस और मुझको ऊपर खींचकर पानी से बाहर निकाल दिया!
इसका एक ही मतलब है मानव! और वह ये...
...कि तेरी किस्मत में पानी में डूबकर मरना नहीं लिखा है...
...बल्कि मेरे हाथों से मरना लिखा है!
नागराज को लेडी वैम्पायर से इतनी फुर्ती की उम्मीद नहीं थी-
वह अपने शरीर को उस नुकीली चट्टान पर गिरने से नहीं बचा पाया-
अब अपनी जान को अपने शरीर से धीरे-धीरे निकलता हुआ देख! तूने बताया था न कि तेरा खून पीकर लोग गल जाते हैं! लेकिन जो पहले से गला हुआ हो, उसको तेरा खून भला क्या नुकसान पहुंचाएगा!
ये सदियों से जमीन में दबे उन गले मुर्दों की नसें हैं जो मेरे इशारे पर जिन्दा होकर तेरा खून पीकर, फिर से अपना पुराना रूप पाने की कोशिश कर रही हैं!
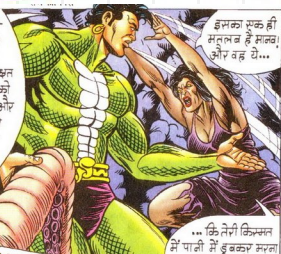
आऽऽऽह! ऐसा लग रहा है जैसे हजारों सुईयां मेरे शरीर में एक साथ धंसकर मेरा खून चूस रही हैं! आऽऽऽह! इच्छाधारी कणों में बदलना भी मुश्किल लग रहा है!
अब तक तू काफी कमजोर हो गया होगा। तेरे लिए हिलना भी मुश्किल होगा! अब जब मैं तेरा सिर धड़ से अलग करूंगी तो तू चीख नहीं पाएगा!
तुझे मैं एक अनोखा वैम्पायर बनाऊंगी! बिना सिर वाला वैम्पायर!
लेकिन उससे पहले वह धारदार चट्टान, लेडी वैम्पायर के हाथ से अलग हो गई-
कौन? कौन आ गया यहां पर...
नागराज का सिर धड़ से अलग होने ही वाला था-
वेदाचार्य का कोई प्रिय मुसीबत में हो, और फेसलेस वहां न पहुंचे, ऐसा भला कैसे हो सकता है?

नागराज की योजना तो आसान सी थी! लेकिन इस योजना को पूरा कर पाना आसान नहीं था-

ओह! चट्टान की सतह बहुत मोटी है! ध्वंसक सर्प खत्म होते जा रहे हैं! लेकिन अभी तक पूरा छेद नहीं कर पाए हैं!

फेसलेस की हालत भी ठीक नहीं है! कोई और तरीका ढूंढना होगा!

कुछ ही पलों बाद नागराज फेसलेस की मदद के लिए लड़ाई में कूद चुका था-
नागशक्तियों में से मैं इस पर सिर्फ विषफुंकार का ही प्रयोग कर सकता हूं! और वह भी हल्की विषफुंकार का! क्योंकि तीव्र फुंकार इसके लिए जानलेवा हो सकती है!
आऽऽऽह!
ओऽऽऽह! हल्की फुंकार को तो ये पचा गई नागराज! और अब इसकी शक्तियां बढ़ती जा रही हैं! जल्दी कुछ सोचो! वर्ना इसको तो हम जिन्दा छोड़ देंगे पर खुद नहीं बचेंगे!
इस समस्या का हल जरूर निकलेगा फेसलेस!
मुझको तो आशा की किरण साफ नजर आ रही है!
आऽऽऽह! ये धूप! सूर्य की किरण इस अंधेरे में कहां से आ गई?

इसने मुझे खुद ही बताया था कि इसके जैसे वैम्पायर सूर्य की किरणों से जलते नहीं हैं बल्कि सूर्य की किरणें उनके वैम्पायर रूप को दबाकर उनको सामान्य बना देती हैं! समस्या सूर्य की किरणें को यहां तक लाने की थी! और वह समस्या मेरे जगमग सर्पों ने दूर कर दी!

मेरे जगमग सर्प सिर्फ अंधेरे में चमकते ही नहीं हैं, बल्कि अपनी चमकीली खाल की मदद से प्रकाश की किरणें को परावर्तित भी कर सकते हैं!
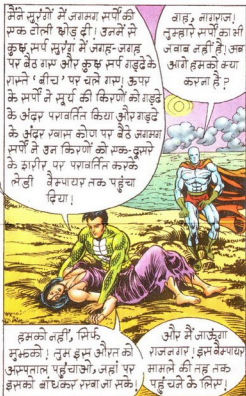
मैंने सुरंगों में जगमग सर्पों की एक टोली छोड़ दी! उनमें से कुछ सर्प सुरंग में जगह-जगह पर बैठ गए और कुछ सर्प गड्ढे के रास्ते 'बीच' पर चले गए! ऊपर के सर्पों ने सूर्य की किरणों को गड्ढे के अंदर परावर्तित किया और गड्ढे के अंदर खास कोण पर बैठे जगमग सर्पों ने उन किरणों को एक-दूसरे के शरीर पर परावर्तित करके लेडी वैम्पायर तक पहुंचा दिया!

वाह, नागराज! तुम्हारे सर्पों का भी जवाब नहीं है! अब आगे हमको क्या करना है?

हमको नहीं, सिर्फ मुझको! तुम इस औरत को अस्पताल पहुंचाओ, जहां पर इसको बांधकर रखा जा सके!

और मैं जाऊंगा राजनगर! इस वैम्पायर मामले की तह तक पहुंचने के लिए!

कहानी 19 पेज से जारी

नागराज राजनगर की तरफ रवाना तो जरूर हो गया था-
लेकिन इस बार का खतरनाक खेल राजनगर में नहीं, बल्कि राजनगर और महानगर से समान दूरी पर पड़ने वाले रूपनगर में खेला जा रहा था-
हम रूपनगर में क्यों आए हैं गुरुदेव? ड्रैकुला की राख तो राजनगर की सड़क पर पड़ी हुई है!
राजनगर में और महानगर में ध्रुव और नागराज की उपस्थिति के कारण हम शांतिपूर्वक अपना काम नहीं कर सकते हैं।
राजनगर के रक्षक सतर्क हो चुके हैं नागपाशा! ड्रैकुला को जीवित करने की प्रक्रिया में इस बार ज्यादा समय लग सकता है।
इसीलिए मैंने अपने काम के लिए रूपनगर के इस कब्रिस्तान को चुना है! महानगर यहां से ज्यादा दूर नहीं है! ड्रैकुला यहां पर जीवित होगा और कहर बरसाएगा महानगर पर!
समझा गुरुदेव! लेकिन ड्रैकुला की राख राजनगर से यहां पर आएगी कैसे?
उसका इंतजाम हो गया है! राख को राजनगर में अभी तक मौजूद ड्रैकुला का सेवक फ्रैंकेस्टीन लेकर आ रहा है।
मैंने उससे मानसिक संपर्क बनाकर उसको ड्रैकुला को जिन्दा करने का आश्वासन देकर उसको इस काम के लिए पटाया है!

"अब वह ड्रैकुला की राख को लेकर आता ही होगा-"
कड़क
फ्रैंकेंस्टीन ने ड्रैकुला की राख को उठा लाने का आसान सा तरीका अपनाया था-
उसने सड़क का वह पूरा टुकड़ा ही उखाड़ लिया था, जिस पर ड्रैकुला की राख पड़ी हुई थी-
ये... ये तो सड़क उखाड़कर लिए जा रहा है! इस पर गोली चलाऊँ क्या सर?
रहने दो! क्यों झगड़ा बढ़ा रहे हो? अभी तो ये चुपचाप जा रहा है! और सड़क पर एक और गड्ढा बढ़ जाएगा तो कौन सी आफत आ जाएगी?
सही कह रहे हैं सर! वैसे भी हमारा काम इसको भगाना है और अभी तो ये अपने आप ही भाग रहा है!
फ्रैंकेंस्टीन को रोकने में पुलिस वालों की दिलचस्पी चाहे नहीं थी-
लेकिन किसी और की दिलचस्पी फ्रैंकेंस्टीन में जरूर थी-
RAJNAGAR
25 KMS
आऽऽऽह! कौन रोक रहा है फ्रैंकेंस्टीन को?
मैं!
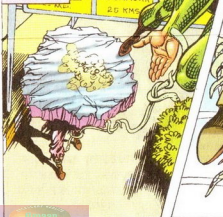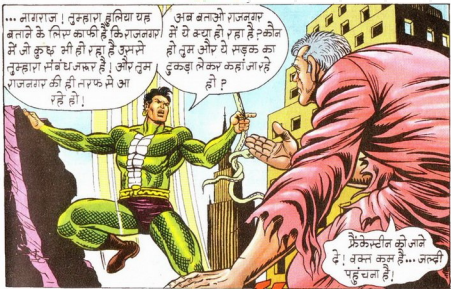
...नागराज! तुम्हारा हुलिया यह बताने के लिए काफी है कि राजनगर में जो कुछ भी हो रहा है उससे तुम्हारा संबंध जरूर है! और तुम राजनगर की ही तरफ से आ रहे हो!
अब बताओ राजनगर में ये क्या हो रहा है? कौन हो तुम और ये सड़क का टुकड़ा लेकर कहां जा रहे हो?
फ्रैंकेंस्टीन को जाने दे! वक्त कम है... जल्दी पहुंचना है!
जाने दे मुझे!
धड़ाक
ओssssह! बला की ताकत है इस फ्रैंकेंस्टीन में! इसको यहां से आगे जाने देना तबाही को दावत देने जैसा है! इसको यहीं पर रोकना होगा!
आह!
धड़ाक
Ankur's UPload

मेरे सर्प बंधनों में इसको बांध सकने की शक्ति नहीं है! इसीलिए इसको बांधने के लिए कुछ ज्यादा ही मजबूत बंधनों की जरूरत पड़ेगी!

नागराज के शक्तिशाली हाथों ने सड़क के बीच में लगी लोहे की रेलिंग के एक पूरे हिस्से को ही उखाड़ लिया-

खक्कक

और एक झटके से फ्रैंकेस्टीन का शरीर उस रेलिंग के बंधनों में कैद होता चला गया-

फ्रैंकेस्टीन ने कसमसाकर ताकत तो जरूर आजमाई, लेकिन बंधन उसकी उम्मीद से कहीं ज्यादा शक्तिशाली थे

अब देखता हूँ कि सड़क के इस टुकड़े में भला ऐसी क्या खासियत है जो इसको उखाड़कर कहीं और ले जाने की जरूरत आ पड़ी!
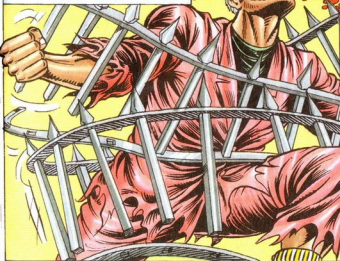
नागराज के उस टुकड़े पर हाथ लगाते ही-

और इस बार लोहे की सलाखों की कई पर्तें भी फ्रेंकेस्टीन को रोक नहीं पाईं-
और फिर वे ही टूटी सलाखें नागराज के शरीर में एक-एक करके धंसने लगीं-
घप्प
घप्प
कुछ ही मिनटों बाद नागराज सड़क से चिपका हुआ था-
आऽऽऽह! आज तो मेरा शरीर वाकई छलनी हो गया है! आऽऽऽह! ये असहनीय पीड़ा मुझे इच्छाधारी कणों में बदलने नहीं दे रही है!
अब और कोई रास्ता नहीं है। इसकी जुबान खुलवाने का इरादा छोड़कर...
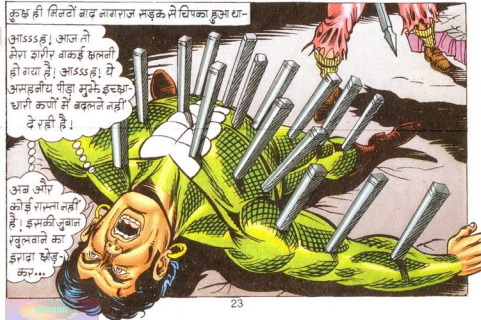
आगे बढ़ते फ्रैंकेंस्टीन के कदम एकाएक रुक गए! सड़क का वह टुकड़ा एक बार फिर उसके हाथों से छूटकर नीचे जा गिरा-
क्योंकि नागराज के आजाद हाथ ने एक सलाख को उसकी कटी गर्दन में धंसा दिया था-
आऽऽऽह! ये तूने क्या किया? क्या करना चाहता है तू ये करके?
अभी पता चल जाएगा! ये लोहे की सलाखें गिरती बिजलियों को मेरी तरफ आकृष्ट कर रही हैं। लेकिन अगर मेरे सर्प इन पर लिपट जाएं तो सलाखों के ऊपर लिपटे 'सर्प-आवरण' सलाखों को बिजलियां नहीं खींचने देंगे। और ऐसी सूरत में सिर्फ एक सलाख गिरती बिजलियों को अपनी तरफ खींचेगी...
...तुम्हारी गर्दन में धंसी सलाख!
मुझको इच्छाधारी कणों में बदलकर आजाद होने का मौका मिल जाएगा!
अब देखना यह है कि तुम्हारा शरीर ऊर्जा के इस भीषण बहाव को झेल पाता है या नहीं!

आsssह! लगता है मेरा शरीर फट जाएगा! लेकिन फिर मालिक का क्या होगा?
मालिक? ये मालिक कौन है?
गर्रर्र
ये... ये गुर्राहट तो... आहा! काम... बन... गया!
फ्रैंकेंस्टीन के हाथों ने सड़क के उस टुकड़े को उठाकर-
हवा में उछाल दिया-
नागराज की विचारधारा में उस धमाके ने व्यवधान डाल दिया-
बडूम
अरे! हवा में उड़ता पंखधारी भेड़िया।
और इसने सड़क के उस टुकड़े को लपक लिया है! आखिर ऐसा क्या है इस टुकड़े में?
ओह! फ्रैंकेंस्टीन के शरीर को ऊर्जा दबाव ने फाड़ डाला है! अपने ही हथियार से मारा गया बेचारा।
लेकिन इतनी देर में वह उड़ता भेड़िया नजरों से गायब हो चुका है। लेकिन मैंने उसके जाने की दिशा को देख लिया है! अब मैं उसके पीछे जाऊंगा!

नागराज, वैम्पायर भेड़िया जितनी तेज गति से नहीं उड़ सकता था! इसीलिए उसको वहां पहुंचने में अभी थोड़ा और वक्त लगना था-
जहां पर भेड़िया वैम्पायर ड्रैकुला की राख के साथ पहुंच चुका था-
ड्रैकुला को फटाफट जिन्दा करो गुरुदेव! ये आप भेड़िए की आंखों में आंखें डालकर क्यों बैठे हो?
क्योंकि जो मैं इसकी आंखों में देख रहा हूं वह तू नहीं देख पा रहा है!
मैं इसकी आंखों में नागराज को देख रहा हूं!
और अब वह भी इधर ही आ रहा है!
ओह! तब तो रूप-नगर आना बेकार हो गया! अब यहां से फटाफट भाग चलो गुरुदेव!
नहीं! भागने से नागराज हमारा पीछा नहीं छोड़ेगा! ये हमको एक सुनहरा मौका मिला है!
ड्रैकुला को यहीं जिन्दा करना होगा! अभी जिन्दा करना होगा ताकि जब नागराज यहां पर आए तो वह अपनी मौत को सामने देखे!
मैं ड्रैकुला को जिन्दा करने की प्रक्रिया शुरू करता हूं!
इस बार इसके शरीर में धंसा 'अस्थि-क्रॉस' कैसे निकलेगा? कौन निकालेगा इस अस्थिक्रॉस को?
ये बाल निकालेगा नागपाशा!
किसका बाल है यह गुरुदेव?
लोरी का! जो फ्रैंकेस्टीन से लड़ते वक्त उसके सिर से टूटकर फ्रैंकेस्टीन की उंगली में लिपट गया था!

जब तक आप लोरी के बाल से क्रॉस खींचेंगे, तब तक तो नागराज आकर हमारी खाल खींच देगा!
चिन्ता मत कर! नागराज के बढ़ते कदमों को रोकेगा भेड़िया वैम्पायर! जा, वर्ना तेरे मालिक का जिन्दा होना तो दूर हम सब भी यहीं पर मरे हुए पड़े होंगे!
ये जा तो रहा है पर वापस नहीं आएगा! ये नागराज के बढ़ते कदमों को धीमा कर सकता है पर रोक नहीं सकता! काम जल्दी निपटाना पड़ेगा!
और जल्दी ही-
क्रॉस निकालने का काम तो आसानी से निपट गया गुरुदेव!
राख का ढेर ड्रैकुला के शरीर का रूप लेता जा रहा है! अब बस इसको खून टपकाकर जिन्दा करना बाकी है!
और वह पांच सेकंड का काम है! फिर हमको समय की जरूरत क्यों है?
तू जितना दुष्ट है उतना ही भोला भी है नागपाशा! तूने एक बार पूछा था न कि हम ड्रैकुला को वश में कैसे करेंगे! हमें समय की जरूरत उसी काम की प्रक्रिया को पूरी करने के लिए है!
देखता जा, और किसी भी अनहोनी के लिए तैयार रह!
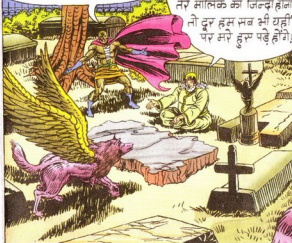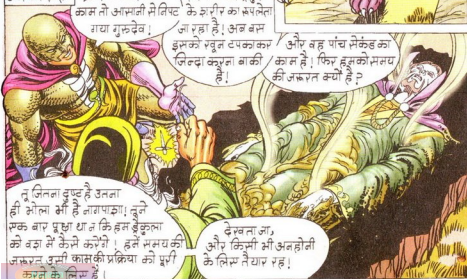
नागराज भी रूपनगर की सीमा तक पहुंच गया था-
ओह! भेड़िया कहीं नजर नहीं आ रहा है! और यह पता करना भी मुश्किल हो रहा है कि रूपनगर में आने के बाद वह किस दिशा में गया होगा!
.....
वह रहा! अब ये मुझसे बचकर नहीं जा सकता! पर... पर ये तो मेरी तरफ ही आ रहा है!
आकाश में इस वक्त एक ही ऐसी चीज थी जो नागराज को थाम सकती थी-
और वह था वैम्पायर भेड़िया-
और कुछ ही पलों बाद नागराज, भेड़िए के ऊपर सवार था-
और अब इसके पास सड़क का वह टुकड़ा भी नहीं है!
भेड़िया वैम्पायर के वार से सर्परस्सी टूट गई! और नागराज का शरीर तेजी से नीचे गिरने लगा-
नागरस्सी भेड़िए के पैरों से ही आ लिपटी-
कड़
कड़ड़क
नागराज ने भेड़िए के पंख तोड़ने में एक पल भी व्यर्थ नहीं किया-

अब 'भेड़िया वैम्पायर' जमीन की तरफ गिरने के सिवाय कुछ भी नहीं कर सकता था-
ये तो लगता है कि संसार से मुक्ति पा गया!
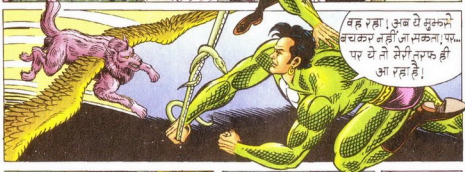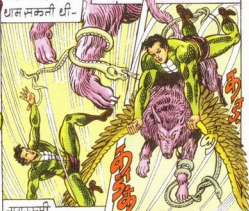
लेकिन मुझको यह पता नहीं चल पाया कि ये सड़क का वह टुकड़ा कहां पर छोड़कर आया है?
नागराज निश्चिन्त हो गया था-
क्योंकि उसको यह पता नहीं था-
कि वैम्पायर इतनी आसानी से नहीं मरते-
आऽऽऽह! इसने तो दांत मेरी गर्दन में गड़ा दिए हैं, वैम्पायरों की तरह! यानी... यानी ये भेड़िया एक वैम्पायर है! इसीलिए ये जमीन पर गिरने के बाद भी नहीं मरा!
घचप

मुझे... मुझे काटने के बाद ये वैम्पायर भेड़िया तो गल रहा है! लेकिन इसके दांत मेरे शरीर में धंस चुके हैं!

और जहां तक मुझको पता है...
...वैम्पायर जिस प्राणी का भी खून पीने की कोशिश करते हैं...

नागराज एक वैम्पायर के रूप में तब्दील हो रहा था-
... वह खुद भी वैम्पायर बन जाता है।
आर्रर्रर्रघ!
वैम्पायर जाति एक बड़ी जीत हासिल करने में सफल हो गई थी
अब उसको दूसरी जीत का इंतजार था-
ये... ये आप क्या कर रहे हैं गुरुदेव! मुझे ड्रैकुला के बगल में क्यों लिटा दिया है?
ड्रैकुला को वश में करने का बस यही एक तरीका है नागपाशा! ड्रैकुला एक वैम्पायर है। जीवित मुर्दा! उसकी सारी शक्ति उसके शरीर के ही कारण है!
इसीलिए मैं ड्रैकुला के शरीर में तेरी आत्मा को प्रविष्ट कराने जा रहा हूं! ड्रैकुला तो गल जाने के डर से नागराज को शायद न काटे...
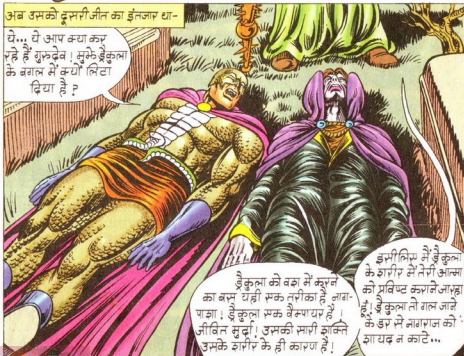
कहानी 35 पेज से जारी

लेकिन जब ड्रैकुला के शरीर में तेरी आत्मा होगी तो तुमको ड्रैकुला के शरीर के गलने की कतई फिक्र नहीं होगी! ...
गुरुदेव की यांत्रिक शक्ति ने नागपाशा की आत्मा को ड्रैकुला के शरीर में प्रविष्ट करा दिया-
और इस घटना के एक-एक पल को ध्यान से देखा गया-
... और जब तक तू नागराज को वैम्पायर बनाकर उसको पाप का गुलाम नहीं बना देता, तब तक मैं तेरे अमर शरीर की रक्षा करूंगा!...
... अब जा, और मिला दे नागराज के जहरीले खून में वैम्पायर की लार के विषाणु!
धोखा! मुझे ध्रुव से लड़वाकर इसने मेरी सारी शक्तियां जान लीं! और अब ये अपने शिष्य के जरिए मेरे शरीर का प्रयोग अपने दुश्मन को खत्म करने के लिए करना चाहता है!
मैं इसको सफल नहीं होने दूंगा! ड्रैकुला को डबल क्रॉस करके कोई नहीं बच सकता...

ड्रैकुला की आत्मा विवश थी! क्योंकि सारी शक्तियां ड्रैकुला के शरीर में ही होने के कारण वह नागपाशा और गुरुदेव का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता था-
उसके देखते-देखते ड्रैकुला का शरीर जीवित हो उठा था-
हाहा हा हा हा!
कमाल हो गया गुरुदेव! मैं अपने अंदर नई-नई शक्तियां महसूस कर रहा हूं! अब मेरे सामने एक नागराज तो क्या दस नागराज भी नहीं ठहर सकते! अब आने दो नागराज को! मैं उसकी एक-एक हड्डी को सौ-सौ टुकड़ों में तोड़ डालूंगा!
पहले हम पूरे महानगर में तबाही फैलाएंगे! हर महानगर वासी को अपनी शक्तियों का बंधक बनाएंगे!
और फिर महानगर वासियों की जान का सौदा नागराज की जान के साथ करेंगे!
और वह सौदा हम कभी पूरा नहीं करेंगे! समझा न? अब जा महानगर, में विनाश फैला!
नहीं, नागपाशा! तू नागराज को मारेगा तो जरूर, लेकिन पहले अपना पलड़ा भारी कर ले! नागराज को कमजोर कर, फिर मार!
नागराज कमजोर कैसे होगा गुरुदेव?
समझ गया गुरुदेव! पर नागराज हमसे ऐसा सौदा करेगा इसकी क्या गारंटी है?
निर्दोषों की जान बचाने के लिए नागराज कुछ भी कर सकता है!
यही उसकी कमजोरी है! अब मैं तेरे शरीर को लेकर जाता हूं! और तू जा महानगर!
नागराज जब यहां पर आएगा तो उसको सिर्फ कब्रें मिलेंगी और मुर्दे!

ये दोनों जा रहे हैं! मैं कैसे रोकूं इनको! कैसे?
मुझे शरीर की जरूरत है! वैसे तो मैं किसी भी मुर्दे के शरीर में प्रवेश कर सकता हूं, लेकिन फिर मेरी शक्तियां उतनी ही होंगी जितनी उस मुर्दे के शरीर में शक्तियां होंगी।
मुझे एक ताकतवर शरीर चाहिए! किसी शक्ति धारक का शरीर!
ओह! ये कौआ काफी देर से उस कब्र के चक्कर काट रहा है! ये कौआ असाधारण है! यानी ये जिस कब्र के चक्कर काट रहा है वह भी असाधारण इंसान की होगी! अभी देखता हूं!
वह कब्र उस जिन्दा मुर्दे की थी-
जिसका नाम था-एंथोनी-
प्रिंस चीख रहा है! इस तरह से वह पहले कभी नहीं चीखा! कब्र के पास जरूर कोई असाधारण अपराध हो रहा है! अपने शरीर में अभी घुसकर इस अपराध को रोकता हूं!
एंथोनी को अपने शरीर में प्रवेश करने का मौका ही नहीं मिला-
क्योंकि उसका शरीर पहले से ही कब्र फाड़कर निकल आया था-
हा हा हा! मिल गया मुझको उन धोखेबाजों को रोकने का रास्ता!
ये शरीर मेरे जितना शक्तिशाली तो नहीं है लेकिन फिर भी मैं काम चला लूंगा!

अब मुझे भी महानगर जाना होगा! उन धोखेबाजों को मौत की नदी पार कराकर मैं फिर से अपना शरीर प्राप्त कर लूंगा...
...आsss ह! कौन?
नागराज हूं मैं!
सड़क का टुकड़ा यहीं पर पड़ा हुआ है! यानी तू ही है वह जिसके लिए वह उड़ता भेड़िया काम कर रहा था!
उसने मुझे वैम्पायर जरूर बना डाला है, लेकिन फिर भी मेरा अपने शरीर पर अभी भी नियंत्रण है! इससे पहले कि मैं अनियंत्रित होकर तुझे मार डालूं, बता दे कि तूने ऐसा क्यों किया है? कौन है तू?

नागराज! ये तो वही नागराज लगता है, जिसको वैम्पायर बनाने की साजिश गुरुदेव द्वारा रची जा रही है! लेकिन ये तो पहले ही वैम्पायर बना हुआ है! जरूर मेरा कोई गुलाम वैम्पायर इसके शरीर में दांत गड़ाने में सफल हो गया है! यानी गुरुदेव को पता नहीं है कि उसकी योजना पहले ही सफल हो चुकी है!
काश इस वक्त मैं अपने शरीर में होता तो ये मेरा गुलाम होता! और मैं दुनिया पर राज करता! जिसका चाहता उसका खून पीता!
लेकिन इस वक्त मेरा फायदा इसमें है कि ये वैम्पायर न बने और उन धोखेबाजों से बदला लेने में मेरी मदद करे!
पर ये होगा कैसे? इसमें तो अजीबो-गरीब शक्तियां हैं! और ये मेरी जान लेने पर उतारू है! इससे बचने के लिए इस शरीर में मौजूद शक्तियों का प्रयोग करना पड़ेगा!
ड्रैकुला एंथोनी की शक्तियों को अब तक समझ चुका था-
वह ट्रांसमिट होकर नागराज के पीछे जा पहुंचा-

नागराज नीचे आ गिरा-
और गिरते ही संधोनी की ठंडी आग ने उसको घेर लिया-
आऽऽऽह! ये कैसी आग है! ये मुझे सुलगाने के बजाय मुझको ठंडा कर रही है!
मेरी रगों में बहता खून जैसे बर्फ बनता जा रहा है!
शुक्र मना कि तू अभी वैम्पायर है! इसलिए नर्क की इस ठंडी आग से अभी तक जिन्दा बचा हुआ है! आम इंसान को तो यह आग अब तक सफेद राख में बदल चुकी होती!
मैंने तुमसे सीधा सा जवाब मांगा था लेकिन तूने मुझ पर जानलेवा वार किया है! अब तो मैं तेरी लाश से ही सवाल पूछूंगा! जवाब चाहे मिले या नहीं!
आऽऽऽऽह!
ये जल्दी ही ठंडी आग की कैद से आजाद हो जाएगा और मुझको अभी तक यह समझ में नहीं आ रहा है कि इसको वैम्पायर रूप से मुक्ति दिलाकर सामान्य रूप में कैसे लाऊं!

यह घमासान युद्ध देख रही स्थोनी की आत्मा बेचैन होती जा रही थी-
मेरे शरीर का प्रयोग नागराज को मारने के लिए किया जा रहा है! जो भी मेरे शव में घुसा है उसको ऐसा करने से रोकना होगा! लेकिन इस रूप में मैं कुछ नहीं कर सकता! मुझे भी एक शरीर चाहिए! ऐसा शरीर जो मेरे शरीर को चुनौती दे सके। और ऐसा शरीर सिर्फ एक ही है...
...मारिया के बेटे किंग का शरीर! किंग, जिसके रूप में मैंने पुनर्जन्म लिया है!
अभी तो मैं जब भी किंग के शरीर में प्रवेश करता था तो स्थोनी की यादें स्थोनी के शरीर में ही छोड़ जाता था!
लेकिन इस बार मुझको स्थोनी की यादों के साथ ही किंग के शरीर में जाना होगा!
और किंग के शरीर में मौजूद शक्तियों की मदद से स्थोनी के शरीर को खाली कराना होगा!
स्थोनी अपनी तरफ से नागराज की मदद करने की कोशिश कर रहा था-
और नागराज को शायद मदद की जरूरत भी थी-
ठंडी आग उसके अंदर की ऊर्जा को नष्ट करती जा रही थी-
लेकिन नागराज से ज्यादा मदद की जरूरत इस वक्त महानगर को थी-

क्योंकि असली खतरा महानगर पर मंडरा रहा था-
आहssss! ड्रैकुला की जिन्दगी तो बड़ी मजेदार है! सम्मोहित करो और खून पियो!
चट् चट्! आहा! गटक, गटक!
जाओ मेरे गुलाम वैम्पायर भेड़ियो! फैला दो दहशत महानगर में! जो मिले उसका खून चूस लो! जो मर गया वह किस्मत वाला होगा, और जो बच गया वह मेरा गुलाम वैम्पायर बन जाएगा!

यानी चित्त भी मेरी, पट भी मेरी और सीधी भी मेरे बाप की! हाहाहा! ये तो शुरूआत है महानगर को बंधक बनाने की! मौत का नाच होना तो अभी बाकी है!
शुरूआत ही इतनी भयानक थी कि अंत का अंदाजा लगाना भी मुश्किल था-
कमिश्नर ने ऑर्डर दे दिए हैं! शूट टू किल! महानगर में आतंक फैलाने वाला एक भी भेड़िया जिन्दा नहीं बचना चाहिए!
लेकिन मुर्दों को क्या बनाती हैं?
माई गॉड! गोलियां तो इन पर बेअसर हैं!
कुछ नहीं-
गोलियां, जिन्दों को मुर्दा बना देती हैं-
ये तो मेरा पूरा हाथ ही चबाए जा रहा है! गन सहित!
कुछ ही देर बाद महानगर की सड़कों पर सिर्फ एक ही चीज चलती-फिरती नजर आ रही थी-
वैम्पायर भेड़िए-

इस आतंक का मुकाबला करने की योजना भी बन रही थी-
सभी महानगरवासियों को सलाह दी जाती है कि वे घरों के अंदर ही रहें! किसी भी सूरत में बाहर न निकलें! और अगली सूचना का इंतजार करें!
मम्मी! मुझे तो बहुत डर लग रहा है!
डर मत चिंपू! कु... कुछ नहीं होगा!
बम गिराओ! चिथड़े उड़ा दो इन शैतानों के!
जमीन पर कुछ और-
लेकिन मौत के एक नहीं अनेक रूप होते हैं-
और हवा में कुछ और-
हैलीकॉप्टर के अन्दर-
ये... ये चमगादड़ कहां से आ गए? ऐसे साइज के चमगादड़ मैंने तो पहले कभी नहीं देखे!
ये वैम्पायर चमगादड़ हैं! हमारा खून चूस रहे हैं!
हवा में यान पर नियंत्रण खोने का एक ही नतीजा होता है-
दुर्घटना-
चिथड़े उड़ाने वालों के खुद ही चिथड़े उड़ गए थे-

हे भगवान! ज़मीन पर भेड़िए घूम रहे हैं और आसमान में चमगादड़! शहर में शैतान का राज हो गया है! अब... अब क्या होगा?
कुछ नहीं होगा मम्मी! ये नागराज का शहर है! तुम देखना नागराज आएगा और शैतान दुम दबाकर भाग जाएगा!
पूरा महानगर नागराज का रास्ता देख रहा था-
और नागराज देख रहा था मौत का रास्ता-
आऽऽऽह! ये ठंडी आग मुझको बांधे हुए है! और मैं अपने ऊपर से नियंत्रण खोता जा रहा हूं!
मेरे सर्प पलक झपकते ही जमीन में सुरंग खोद देंगे! मैं जमीन में घुस जाऊंगा...
इसकी ठंडी ज्वाला से बचने के लिए मुझे कुछ करना होगा!...
...और आग मुझ तक नहीं पहुंच पाएगी!...
तड़ाक
...लेकिन मुझको इस तक पहुंचने का मौका मिल जाएगा!
आगाह!
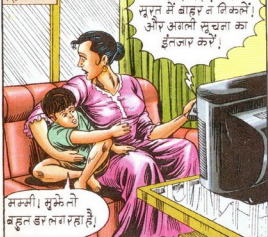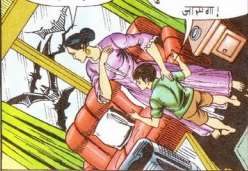
आक थू! मुर्दों के अवशेषों से सनी हुई यह मिट्टी जमीन में घुसने से मेरे मुंह में भी जा घुसी है!
मेरे वैम्पायर रूप का मन तो इसको चबा जाने का कर रहा है, लेकिन मैं इसको सह नहीं सकता!
थूsss
अब मैं तेरे चिथड़े उड़ा डालूंगा! फाड़ डालूंगा तुझको!
बड़ाम
मैं तो मुर्दा हूं! मैं तो शव बनकर भी दुबारा पैदा हो सकता हूं। वैसे तो मुझे इन धमाकों से कोई खास तकलीफ नहीं है! लेकिन अगर मैं मार खाता रहूंगा...
...तो मारूंगा कब?
आssss ह! तू फिर गायब होकर मेरे पीछे प्रकट हो गया! गायब होने का इतना ही शौक है तो मुझसे मार क्यों खा रहा है? गायब होकर दूर क्यों नहीं भाग जाता?
मैं गायब नहीं होता ट्रांसमिट होता हूं। और बदकिस्मती से मैं वहींतक ट्रांसमिट हो सकता हूं जहां तक मेरी नजर देख सकती हो! लेकिन फिलहाल मेरा इरादा इस शक्ति का प्रयोग करके भागने का बिलकुल भी नहीं है!

लेकिन मेरा इरादा तुझे होश की दुनिया से भगाने का जरूर है!

तूने अपनी ट्रांसमिट-शक्ति की एक कमी बताकर मेरा काम आसान कर दिया है!

तू वहीं तक ट्रांसमिट हो सकता है जहां तक देख सके...

...इसलिए अब तू देख ही नहीं पाएगा।

सर्प डिब्बे ने देखते ही देखते एंथोनी को अपने अंदर बंद कर लिया-

ये सांप मुझे रोक नहीं पाएंगे! मेरी ठंडी आग इनको पलक झपकते ही खत्म कर देगी!

इसका मौका तुझे नहीं मिलेगा, मुर्दे! तुझे अब किसी भी चीज का मौका नहीं मिलेगा!

क्योंकि तेरे चक्कर खाते सिर के साथ तुझको मैं तेरी कब्र में फेंकने जा रहा हूं!

यहां पर एक ही फटी कब्र है। यही तेरी कब्र होगी!

संधोनी के मुर्दा शरीर के अंदर पहुंचते ही कब्र गड़गड़ा कर बंद होने लगी। और-

...जैसे मैं अपने आप पर फिर से नियंत्रण पाता जा रहा हूं।

लेकिन ये तो बताओ कि ये सब चक्कर क्या है? वह फ्रैंकेस्टीन, हवा में उड़ता वैम्पायर भेड़िया और वह सड़क का टुकड़ा? इन सबके साथ क्या षड़यंत्र रचा जा रहा है? कौन रच रहा है ये षड़यंत्र?

ड्रैकुला! महावैम्पायर ड्रैकुला ये सारा षड़यंत्र रच रहा है। ये सभी उसी के सेवक थे।

और अब वही ड्रैकुला महानगर में विनाश फैलाकर तुमको वश में करने गया है!

उसी ड्रैकुला को नष्ट करने के लिए मुझको तुम्हारी मदद की जरूरत है!

और इसीलिए मैं न चाहते हुए भी तुमको वैम्पायर रूप से मुक्ति दिलाने के लिए लड़ रहा था।

मामला खतरनाक है। ड्रैकुला कुछ भी कर सकता है। हमको तुरन्त महानगर पहुंचना होगा, संधोनी!

संधोनी के शरीर में मौजूद ड्रैकुला ने बड़ी सफाई से नागराज की मदद हासिल कर ली थी-

लेकिन अभी यह तय होना बाकी था कि नागराज की मदद भी 'ड्रैकुला' को नागपाश से उसका शरीर वापस दिला पाएगी या नहीं-

क्योंकि दो मौतों के बाद जी उठा ड्रैकुला का शरीर पहले से ज्यादा शक्तिशाली हो उठा था! और बगैर 'शरीर' को काबू में किए हुए नागपाश को उस शरीर से बाहर निकाल पाना असंभव था-

हा हा हा! सभी महानगरवासी अपने- अपने घरों में दुबक गए हैं! वे समझते हैं कि जब तक वे वहां हैं तब तक वे सुरक्षित हैं! उनको घरों से बाहर निकालना होगा! उनको जान की भीख मांगने के लिए मजबूर करना होगा! और ऐसा होने के बाद महानगर वासियों की जान का सौदा होगा नागराज की जान के साथ!

आओ, अंधेरे के प्राणियो! नर्क के बाशिंदो! खून के प्यासो! आओ, सुनो अपने मालिक ड्रैकुला का हुक्म और उसे मानो!

ड्रैकुला दो लोकों के बीच में भटकती दुष्टआत्माओं का आह्वान कर रहा था-

और दुष्टात्माएं सदियों से ऐसे ही किसी आदेश का इंतजार कर रही थीं-

ईssssss
ये बदबू खाने की है! सड़ा खाना लाई हो तुम! इसमें तो कीड़े कुलबुला रहे हैं!
ये... ये कैसे हो सकता है? मैंने तो खाना अभी-अभी बनाया है!
मैं... मैं अभी बर्तन धोकर कुछ और बना लाती हूं! पता नहीं क्या हो रहा है!
ईssssssss
ये तो किचन से मम्मी चिल्ला रही हैं!
क्या हुआ?
तुम्हारे... तुम्हारे हाथों में खून लगा है! हाथ कट गया है क्या?
नहीं... नहीं!
नल... नल में पानी की जगह खून आ रहा है!
फ्रिज में रखी पानी की बोतलों का पानी भी खून बन गया है! खाना सड़ गया है। ये क्या हो रहा है भगवान! बचा ले हमें! बचा ले!
बिना खाद्य-पेय हम कितने दिनों तक बचेंगे? बचना है तो हमको ड्रैकुला के सामने घुटने टेकने ही पड़ेंगे!
महानगर वालों की इच्छा शक्ति जवाब दे रही थी-

हट जाओ!
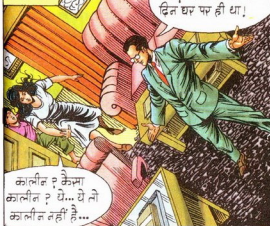
लेकिन मुरली को हटने का मौका ही नहीं मिला-

क्योंकि उसका मांस ही उसके बदन से हट चुका था-

चटर

चटर चटर

ओ माई गॉड! ओ माई गॉड! मैं... मैं घर के अंदर नहीं रुक सकती! एक पल भी नहीं रुक सकती! म... मैं बाहर जाऊंगी!

मांसभक्षी कीड़ों की फौज ने महानगर के हर घर में घुसकर निवासियों को सड़क पर लाकर खड़ा कर दिया था-
जहां पर भेड़ियों की फौज उनको फाड़ खाने के लिए तैयार खड़ी थी-
उनको एक ही चीज बचा सकती थी! ड्रैकुला की शक्ति के सामने आत्म-समर्पण -
हमको बख्श दे, ड्रैकुला!
हम तुमसे अपनी और अपने बच्चों की जान की भीख मांगते हैं!
हम तुम्हारी सत्ता को स्वीकार करते हैं! तुम जैसा हुक्म दोगे, हम वैसा ही करेंगे!
अरे, वाह! ड्रैकुला की शक्तियों ने तो मेरा काम बड़ी आसानी से कर दिया! अब नागराज से सौदा करना आसान हो गया है! पर नागराज है कहां पर?
नागराज भी आ जाएगा! लेकिन उसके आने से पहले मैं उस शिकंजे को खोल दूंगा...

...जिसमें तूने महानगर वासियों को जकड़ रखा है! तू नर्क की पैदाइश है, और तुझे वहीं पर जाना होगा ड्रैकुला!
ये तो फेसलेस है!
पर इसको न पहचानने का नाटक करना होगा।
कौन है तू जो ड्रैकुला की शक्तियों को चुनौती देने का साहस कर रहा है! मेरे एक इशारे पर तेरे बदन को मेरे करोड़ों- अरबों आदमखोर कीड़े चट कर जाएंगे!
मुझे फेसलेस कहते हैं! और तू शायद मुझको उन कीड़ों की धमकी दे रहा है!

ये... ये तो वही कीड़े हैं! तूने इनको एक जगह पर कैसे इकट्ठा कर लिया? किस शक्ति का प्रयोग कर रहा है तू?
इसको तिलिस्मी शक्ति कहते हैं ड्रैकुला! और तिलिस्म में तंत्र हो या मंत्र हो, हर शक्ति को बांधने की क्षमता होती है!
अब देख कि मैं कैसे तेरे कीड़ों को धुआं बनाकर नर्क के रास्ते पर भेज देता हूं!
गगनचुंबी इमारतों को भी बौना बनाता आदमखोर कीड़ों का वह टीला-

फेसलेस के इशारे से धधक उठा-
तूने... तूने मेरे कीड़ों को जला डाला!
पर ऐसा करके तूने महानगर वासियों पर कसी मेरी मुट्ठी की सिर्फ एक उंगली को खोला है!
शिकंजा अभी भी कसा है और कसा रहेगा!
फाड़ डालो इसको!
अविनाशी भेड़िए दोनों तरफ से फेसलेस पर कूद पड़े-

लेकिन फेसलेस तक पहुंच नहीं सके-

तू ये क्या कर रहा है? मेरे भेड़िए कहां गायब होते जा रहे हैं?

मेरा तिलिस्मी छल्ला इनके लिए उस लोक का द्वार खोल रहा है, जहां से ये आए हैं! ये वापस जा रहे हैं!... तुम्हारी कैद से आजाद हो रहे हैं ये?

फेसलेस तो बड़ी टेढ़ी खीर मालूम पड़ता है! गुरुदेव तो मेरा शरीर लेकर आराम से बैठ गए हैं, और मुझको इस जंगल में फंसा गए हैं! नागराज भी अब किसी भी समय आता होगा! उसके आने से पहले ही इस मुसीबत को दूर करना होगा! पर कैसे?

कि गुरुदेव उसकी हर हरकत पर नजर रखे हुए था-

मैं जानता था कि नागपाशा को इतनी शक्तियों के बाद भी मदद की जरूरत पड़ेगी!

और अब उसको वह शक्ति मैं दूंगा!

फेसलेस यह बात नहीं जानता है कि ड्रैकुला, ड्रैकुला नहीं बल्कि नागपाशा है!

वह उस पर वही शक्तियां आजमाएगा जो एक वैम्पायर पर कारगर सिद्ध हो!

इसीलिए मैं नागपाशा के पास यांत्रिक शक्तियों को दूर प्रेषित कर रहा हूं!

महानगर में-

लो ड्रैकुला! अब महानगर वासी तुम्हारी नारकीय शक्तियों से सुरक्षित हैं! और अब मैं इनको हमेशा के लिए तुमसे सुरक्षित रखने का उपाय कर रहा हूं! इनको तिलिस्मी कवच की सुरक्षा प्रदान करके!

इनको तो तूने सुरक्षा प्रदान कर दी...

...लेकिन तुझको सुरक्षा कौन प्रदान करेगा?

ये वैम्पायर शक्ति नहीं है फेसलेस! ये यांत्रिक शक्ति है!

ये किरण मेरे तिलिस्मी कवच को कैसे छेद गई! इसको तो कोई भी वैम्पायर शक्ति पार नहीं कर सकती है!

आऽऽऽह!

यांत्रिक शक्ति! यांत्रिक शक्ति तुम्हारे पास कैसे आई?

और... और इस यांत्रिक शक्ति को तो मैं पहचानता हूं! ये गुरुदेव की यांत्रिक शक्ति है! यानी वह तुम्हारी मदद कर रहा है! पर क्यों?

जहां तक मैं जानता हूं वह तो नागपाशा के अलावा और किसी पर भरोसा करता ही नहीं है... शायद... तुम हैकुला नहीं कोई और हो!
तू समझा तो सही है फेसलेस! लेकिन जरा देर से समझा है!
अब समझने या न समझने से तुझको कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है!
यांत्रिक शक्तियों से युक्त ये सलारव पहले तेरे तिलिस्मी कवच को छेदेगी और फिर तेरे दिल को!...
ओ! तूने पलटकर अपने दिल पर आता वार कंधे पर ले लिया। यानी तू तड़प-तड़पकर मरना चाहता है! खैर, तेरी मर्जी... वैसे मैं तो तुझको...
घच
...एक झटके से मार देना चाहता... अरे! मेरे दंड को किसने तोड़ डाला?
किसमें है मेरी यांत्रिक शक्ति को चूर करने की शक्ति?
बड़ाम
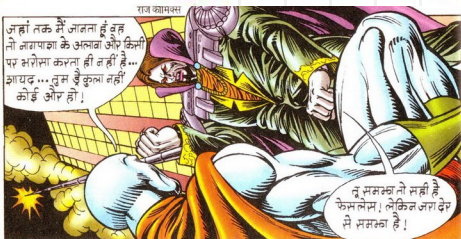
मेरी 'ध्वंसक सर्प शक्ति' में यह क्षमता है ड्रैकुला! क्योंकि देव कालजयी से वरदान में प्राप्त होने के कारण ये सर्प तांत्रिक, मांत्रिक या यांत्रिक किसी भी शक्ति को भेद सकते हैं!
नागराज!
तू आ गया! लेकिन तू साथ में किसको ले आया? तुझको मदद की जरूरत कब से पड़ने लगी?
कमाल है! अभी हमारी पहली मुलाकात हो रही है, और तुम मेरा नाम तक जानते हो! और ड्रैकुला को यांत्रिक शक्तियों की जरूरत कब से पड़ने लगी? कुछ समझ में नहीं आ रहा है! जरूर कहीं पर कुछ गड़बड़ है!
सारे महानगरवासी तुझे नाम ले-लेकर पुकार रहे हैं!
और मैं तेरा खून पीने के लिए ही तो यहां पर आया हूं! फिर मुझको तेरे बारे में पता क्यों नहीं होगा? फिर इसमें गड़बड़ कहां पर है?

गड़बड़ है नागराज! ये ड्रैकुला नहीं है! बल्कि ड्रैकुला के शरीर में...
आऽऽऽह!
बहुत बोलता है तू! लगता है किन्तु मरने के बाद ही चुप होगा!
हट पीछे ड्रैकुला!
फेसलेस! तुम ठीक तो हो न?
अब ऐसा नहीं होगा फेसलेस! क्योंकि इसकी शैतानी शक्तियों का सामना करने के लिए अब मेरे साथ मुर्दा संयोगी मौजूद है!
हमारी संयुक्त शक्ति के सामने ये टिक नहीं पाएगा!
म... मैं ठीक हूं नागराज! तुम ड्रैकुला से जल्दी निपटो! वर्ना ये फिर महानगरवासियों को बंधक बनाकर तुमको मारने की कोशिश करेगा...
...पहली बार तो मैंने इसका प्लान विफल कर दिया! अब इसके दुबारा ऐसा कर पाने से पहले ही इसको खत्म कर दो! वर्ना पूरी दुनिया पर इसका ही राज्य हो जाएगा!
मुर्दे को साथ लाए हो तो इसको मुर्दों से ही लड़ने दो!
मैं भी तो देखूं कि भला ये महानगर को मेरे चंगुल से कैसे बचा पाता है?
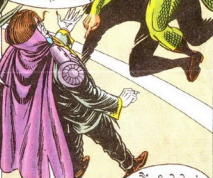
ड्रैकुला उर्फ नागपाशा का हाथ हवा में उठते ही तेज हवाएं महानगर को मथने लगीं-
और आपस में घर्षण पैदा करती हवाओं में से एक अजीब सी ऊर्जा निकलकर-
पूरे महानगर की जमीन को जगह-जगह से फाड़ने लगीं-
और सदियों से जमीन की आगोश में सोए मुर्दे बाहर आने लगे-
महानगर वासियों को अपने साथ अपनी कब्रों में ले जाना-
संथोनी के शरीर में मौजूद ड्रैकुला की आत्मा यह देखकर आगबबूला हो उठी-
ओफ! ये कमीना तो मेरी ही शक्तियों का प्रयोग करके अपना मतलब साध रहा है। मैं ऐसा नहीं होने दूंगा। ड्रैकुला की शक्तियों का अगर कोई प्रयोग करेगा तो सिर्फ ड्रैकुला!
मुझे इस मुर्दे संथोनी के शरीर में मौजूद सीमित शक्तियों की मदद से अपने ही गुलामों को रोकना होगा। नागराज की मदद करनी होगी! ताकि वह मुझे मेरा शरीर वापस दिला सके!
और उनके बाहर आने का एक ही मकसद था-
फिर मैं नागपाशा से भी निपट लूंगा, और नागराज से भी!
तुम ड्रैकुला पर ध्यान दो नागराज! मुर्दों से निपटने का काम संथोनी पर छोड़ दो!

ठीक है संयोनी! तुम्हारे कारण मैं महानगर वासियों की सुरक्षा की तरफ से निश्चिन्त हो गया हूं! अब मैं अपना सारा ध्यान ड्रैकुला को हराने में लगा सकता हूं! मैं इसको मार तो नहीं सकता, लेकिन बेहोश जरूर कर सकता हूं!
मैं इतना ही तो चाहता हूं नागराज! एक बार ड्रैकुला यानी मेरा शरीर बेहोश हो जाए तो मैं एक बार फिर अपने शरीर पर कब्जा करने की कोशिश कर सकता हूं!
मैं सही समय पर यहां पहुंचा हूं! मेरे शरीर में घुसी ड्रैकुला की आत्मा ने बड़ी चालाकी से नागराज के साथ दोस्ती करली है! उसका एकमात्र उद्देश्य अपने शरीर को वापस हासिल करना है। और मुझको यह तक समझ में नहीं आ रहा है, मुझको जो हो रहा है उसको होने देना चाहिए या रोकना चाहिए!
आज पहली बार किंग की शख्सियत पर संयोनी की शख्सियत हावी हो रही थी—

मैंने निर्णय ले लिया है! संथोनी के मुर्दा शरीर में घुसा ड्रैकुला भी वही कर रहा है जो मैं अपने शरीर में रह कर करता! वह अपनी ही शक्तियों के कारण पैदा हुए शैतानों को खत्म कर रहा है! मैं तब तक इंतजार करूंगा, जब तक ये सारे शैतान खत्म नहीं हो जाते! उसके बाद मैं अपने ही मुर्दा शरीर संथोनी को खत्म करके ड्रैकुला की आत्मा को आजाद करूंगा...
...और फिर खुद किंग का शरीर छोड़कर आत्मा रूप में ड्रैकुला की आत्मा को वश में करूंगा!
तब तक शायद नागराज ड्रैकुला के शरीर को भी बेहोश कर देगा! और तब ड्रैकुला का शरीर बेहोशी की कैद में होगा और उसकी आत्मा मेरी कैद में!
तब तक मैं नागराज और ड्रैकुला का युद्ध देखता हूं और इस बेहोश नकाबपोश को इन शैतानों से बचाता हूं!
वर्ना ड्रैकुला के शैतान इसको जमीन के नीचे खींच ले जाएंगे!
किंग की उम्मीद पूरी होती नजर नहीं आ रही थी-
क्योंकि नागराज ड्रैकुला की यांत्रिक शक्ति से पार नहीं पा, पा रहा था-
मेरी शैतानी शक्तियां तो दूसरे शैतानों को पैदा करने में व्यस्त हैं, नागराज! लेकिन मेरी यांत्रिक शक्तियां मुक्त हैं! मैं दोनों तरफ एक साथ वार कर सकता हूं! अगर तू अभी भी घुटने टेक दे और मेरा गुलाम बन जाए तो महानगर बच जाएगा! वर्ना मेरी गुलाम आत्माएं हर महानगर वासी को कब्रों में घसीट ले जाएंगी!

ये सही कह रहा है! मुझे ये लड़ाई जल्दी से जल्दी खत्म करनी होगी! वर्ना मुझे सचमुच घुटने टेकने के लिए बाध्य होना पड़ेगा!

राहत की बात बस यही है कि फिलहाल मुझको सिर्फ इसकी यांत्रिक शक्ति से निपटना है! लेकिन यांत्रिक शक्ति इसके पास आई कहां से?

लेकिन 'किंग' के पास ये सूचना तेजी से पहुंच रही थी-

कांव कांव कांव

मुझे बचाने के लिए शुक्रिया बच्चे! पर तुम हो कौन? और... और ये कौआ तुमको क्या बता रहा है?

ये प्रिंस है! मेरा कौआ! ये ड्रैकुला की पोल खोल रहा है! ये बता रहा है कि ड्रैकुला के शरीर के अंदर किसी नागपाशा की आत्मा है!

नागपाशा! ओह, तो इस बार ये चाल चली है उस दुष्ट ने!

तुम्हारा परिचय फिर कभी पूछूंगा दोस्त! फिलहाल मुझको किसी की मदद लेने जाना है!

अब मुझको भी सारी बात का पता चल गया है! अब मुझे भी योजना बनाने में आसानी होगी!

फेसलेस को मदद तिलिस्मी गुरू वेदाचार्य से चाहिए थी-

हां, दादाजी! और उसको अगर कुछ रोक सकता है तो सिर्फ आपका तिलिस्म!

ये तुम क्या कह रही हो भारती? नागपाशा ड्रैकुला की शक्तियों की मदद से आतंक फैलाकर, नागराज को वश में करना चाहता है!

पूरा महानगर उसके शिकंजे में है! मुझे बड़े तिलिस्म की रचना करनी होगी!

और इसमें वक्त लगेगा! लेकिन मैं ये तिलिस्म बनाऊंगा! जरूर बनाऊंगा!

संथोनी के शरीर में मौजूद ड्रैकुला को अपने गुलामों की हर एक कमजोरी मालूम थी-
इसीलिए उसको उन्हें वापस जमीन के अंदर भेजने में कोई दिक्कत पेश नहीं आ रही थी-
ये गया आखिरी शैतान वापस जमीन के अंदर! अब मैं और शैतानों के बाहर आने तक नागराज की मदद कर सकता हूं!
तुम नागराज की मदद कैसे करोगे संथोनी?
तुमको तो खुद ही मदद की जरूरत पड़ने वाली है!
किंग! तुम यहां पर कैसे?
मैं तुमसे अपना शरीर वापस लेने आया हूं ड्रैकुला!
संथोनी की याददाश्त को टटोलकर, उसके शरीर के अंदर मौजूद ड्रैकुला की आत्मा ने किंग के बारे में जान लिया था-
ले लेना! अगर अपना शरीर मेरी ठंडी आग से बचा पाए तो जरूर ले लेना!
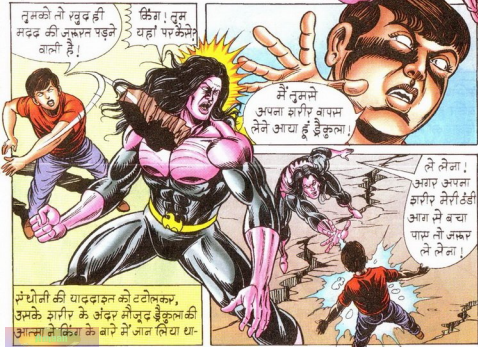
ये ठंडी आग किंग के शरीर पर असर नहीं डाल पाएगी ड्रैकुला! अगर तुम एंथोनी की याददाश्त को और टटोलोगे तो तुमको पता चल जाएगा कि एंथोनी, किंग के शरीर को एक ऐसे ऊर्जा कवच से सुरक्षित कर देता है जिसको कोई भी शक्ति पार नहीं कर सकती! ... ठंडी आग भी नहीं!

अगर मैं तुझे नुकसान नहीं पहुंचा सकता तो तू भी मुझको नुकसान नहीं पहुंचा सकता! अब तो एंथोनी के शरीर में पानी से डरने वाली प्रवृत्ति भी नहीं है!

मस्तिष्क की शक्ति दुनिया में सबसे बड़ी शक्ति होती है! और किंग के जिन्दा दिमाग की मानसिक ऊर्जा का सामना एंथोनी का मुर्दा दिमाग नहीं कर सकता!

आऽऽऽह!

सड़क की पर्त कड़कड़ाकर टूट गई और 'एंथोनी' सीवर में गिरने लगा-

मुझे यहां से ट्रांसमिट होकर बाहर निकलने में ज्यादा समय नहीं लगेगा!

जरूर ट्रांसमिट होना एंथोनी उर्फ ड्रैकुला...

...लेकिन पहले देखने के लिए रोशनी का इंतजाम तो कर लो!
मानसिक शक्ति ने जैसे सड़क की सतह को तोड़ा था, वैसे ही जोड़ भी डाला-
और सीवर लाइन घुप्प अंधेरे में डूब गई-
ओफ! कुछ भी नजर नहीं आ रहा है! और बगैर कुछ दिखे ट्रांसमिट होने की कोशिश का कोई नतीजा नहीं निकलेगा!
अब तुम्हारे सामने दो ही रास्ते हैं ड्रैकुला! या तो संथोनी यानी मेरा शरीर छोड़कर आत्मा रूप में सीवर लाइन के बाहर आ जाओ, और या फिर संथोनी के शरीर की कैद में रहकर हमेशा के लिए इस सीवर लाइन में भटकते रहो!
तूने मेरे सामने कोई रास्ता नहीं छोड़ा है संथोनी! अब तो मुझे इस शरीर से बाहर आकर तुमसे निपटना ही पड़ेगा!
अब अगर मैं तेरे शरीर में नहीं रह सकता तो तू भी अपने शरीर में तब तक नहीं घुस सकता जब तक मैं ऐसे शरीर को न ढूंढ लूं, जिसके जरिए मैं अपने शरीर को वापस पा सकूं!
दो जबरदस्त शक्तियुक्त आत्माएं एक दूसरे से टकरा रही थीं-
ओह! यह मुझको रूपनगर की तरफ धकेलने की कोशिश कर रहा है! पर क्यों?
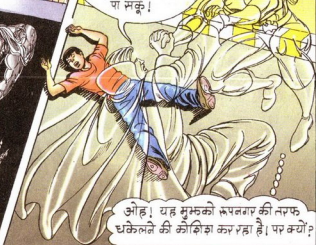
एक-दूसरे से उलझी दोनों आत्माएं बिजली से भी ज्यादा तेज गति से रूपनगर की तरफ बढ़ रही थीं-
और महानगर में नागराज एक हारती हुई लड़ाई लड़ रहा था-
ओफ़! मैं इसके यंत्रों को जैसे ही तोड़ता हूं वैसे ही इसके शरीर पर और यंत्र उभर आते हैं!
समझ में नहीं आ रहा है कि ड्रैकुला के पास ये शक्ति कहां से आई? कहीं ये गुरुदेव का काम तो नहीं है!
ये गुरुदेव का ही काम था-
हा हा हा! अब तो वह मुर्दा भी कहीं नजर नहीं आ रहा है!
नागपाशा फिर से दुष्टात्माओं को बुला! महानगर पर कहर बरसा, और नागराज को घुटने टेकने पर मजबूर कर दे!
अरे, अरे! मुझे दो आत्माएं लड़ती हुई नजर आ रही हैं!
ये... ये तो उसी मुर्दे की और... और ड्रैकुला की आत्माएं हैं!
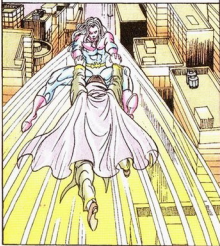
और... और ड्रैकुला, नागपाशा के शरीर में घुसने की कोशिश कर रहा है! अभी मेरी यांत्रिक शक्ति, नागपाशा की मदद करने में व्यस्त है! इसीलिए नागपाशा के शरीर पर चढ़ा सुरक्षा कवच थोड़ा क्षीण हो गया है! ड्रैकुला की आत्मा उसको भेदने में सफल हो सकती है!
क्या करूं मैं? क्या करूं?
अब मैं समझा ड्रैकुला की चाल! ये यहां पर नागपाशा के शरीर में घुसने के लिए आया था!
और मैं इसको शायद रोक नहीं पाऊंगा! एक ही रास्ता है! नागपाशा के शरीर को रास्ते से हटाना होगा! प्रिंस भी मेरे पीछे उड़ता हुआ यहां तक आ पहुंचा है। अगर ड्रैकुला नागपाशा तक पहुंच सकता है तो प्रिंस और उसके दोस्त भी नागपाशा के शरीर तक पहुंच सकते हैं!
प्रिंस, संयोनी का हर एक इशारा समझता था-
प्रिंस!
उसकी चोंच खुली! एक कर्कश आवाज गूंजी-
और दर्जनों की तादाद में ठूंठों में से कौए नागपाशा के शरीर पर टूट पड़े-
अरे, अरे! ये... ये क्या? कौए! दर्जनों कौए नागपाशा के शरीर को नोंच रहे हैं! नागपाशा का शरीर दर्जनों कौओं के पेट में अलग-अलग चला गया तो फिर कभी जुड़ नहीं पाएगा! ...
... अब तो नागपाशा को जगाना ही पड़ेगा। यांत्रिक शक्ति की मदद से इस शरीर को लेकर महानगर तक जाना होगा!

वैसे तो यांत्रिक शक्ति की मदद से नागपाशा के शरीर को सुरक्षित करना मेरे लिए मामूली सा काम है, लेकिन इस वक्त यांत्रिक शक्ति का प्रयोग मैं ड्रैकुला के शरीर को शक्ति देने में कर रहा हूं! अगर ये शक्ति मैंने उधर से हटाई तो नागराज शायद ड्रैकुला और उसके शरीर में घुसे नागपाशा को हरा दे! अब तो इस मुसीबत से बचने के लिए महानगर पहुंचकर नागपाशा की आत्मा को उसके इस शरीर में स्थानांतरित करना ही होगा!...
...आगे की योजना बाद में सोचेंगे!
गुरुदेव जा रहा है! मुझे भी उसके पीछे जाना होगा!
प्रिंस और उसके दोस्त कौओं की हरकतों ने पूरी घटना को एक अजीब सा मोड़ दे दिया था-
नागराज पर मेरी यांत्रिक शक्तियां कुछ खास असर नहीं डाल पा रही हैं! अब तो मैं ड्रैकुला की शैतानी शक्तियों का प्रयोग भी कर सकता हूं!
क्योंकि इनसे लड़ने के लिए वह मुर्दा तो अब आस-पास कहीं है ही नहीं!
लेकिन मेरी शैतानी शक्तियां भी पूरी तरह से काम क्यों नहीं कर रही हैं? शैतानी आत्माएं पूरी तरह से जमीन से बाहर क्यों नहीं आ पा रही हैं?
शायद मुझे ड्रैकुला की शक्तियों का पूरी तरह से उपयोग करना नहीं आता है! या फिर चक्कर कोई और ही है!
दोनों ही बातें सही थीं! ड्रैकुला की शक्तियों का पूरी तरह से उपयोग भी नहीं हो रहा था-

और एक दूसरा कारण भी था-
वेदाचार्य पूरे महानगर को तिलिस्मी जाल में घेर रहे थे-
जल्दी कीजिए दादाजी! मुझे नागराज की मदद के लिए भी जाना है!
और तिलिस्मी जाल शैतानी शक्तियों को काट रहा था-
मैं जानता हूं भारती! लेकिन मुझे इतना बड़ा तिलिस्मी जाल फैलाने के लिए तुम्हारी मदद की जरूरत है!
घटनाएं फिर से एक नया मोड़ ले रही थीं-
ये... ये क्या? ड्रैकुला के माथे से एक मशीनी यंत्र आकर टकराया है!
और ड्रैकुला अचेत होकर गिर रहा है! किसने की है मेरी मदद?
ये... ये तो गुरुदेव हैं!
और उसकी बांहों में बेहोश नागपाशा है!
तुम लोग मेरी मदद के लिए नहीं आ सकते! चक्कर कुछ और ही है!
सही समझे, नागराज! मैं नागपाशा की मदद के लिए आया हूं!
उस नागपाशा की, जिसकी आत्मा अभी तक ड्रैकुला के शरीर के अंदर थी! और अब वह अपने शरीर में प्रवेश कर रही है!
और नागपाशा फिर से जिन्दा हो रहा है!
ड्रैकुला के जरिए तो हम तुमको नहीं मार पाए! लेकिन अब हम तुमको अपने हाथों से मारेंगे! अभी और यहीं!
नागपाशा के शरीर के टुकड़े कौओं का शरीर फाड़कर नागपाशा के शरीर से आ मिले-

गुरुदेव के षड्‌यंत्रों के बारे में ज़ानने के लिए पढ़ें मृत्युदंड, नागद्वीप, त्रिफना, महायुद्ध एवं ऐलान-ए-जंग, काली मौत, नागराज अमेरिका में, आतंकवादी नागराज।

रुंथोनी की आत्मा का शिकंजा खुलते ही ड्रैकुला की आत्मा तेजी से लपकी-
और ड्रैकुला जी उठा-
हाऽऽऽऽ ऽऽऽऽऽ
हे शैतान!
सिर्फ तुम ही नहीं! अब कोई इंसान नहीं बचेगा! अब ड्रैकुला को कुछ नहीं मार सकता! न थूलोजियन और न ही उसके वंशज! अब ड्रैकुला अमर हो गया है!
अब हम नहीं बचेंगे गुरुदेव! पहले ये हमको तड़पा-तड़पा कर मारेगा, फिर हमें मारने के बाद हमारी आत्माओं को मार-मार कर तड़पाएगा!
ओफ़! ड्रैकुला जी उठा! और इस बार जरूर इसके अंदर इसकी ही आत्मा होगी!

क्योकिमेरे इस शरीर के अंदर इतनी प्रतिरोधक क्षमता विकसित हो गई है कि अब न तो मुझे यूलोजियन जैसे किसी संत की हड्डियां मार सकती हैं और न ही उसके किसी वंशज की! अब ड्रैकुला अमर है! आओ मेरी गुलाम शैतान प्रेतात्माओं और फैला दो चारों तरफ अपनी दहशत का राज!
आओ!
ये... ये क्या हो रहा है गुरुदेव! अब तो जर्रे-जर्रे से मुर्दों के अंग बाहर फूटने लगे हैं! ये कैसे संभव है? इसको रोको!
इस दुनिया में सदियों से अरबों-खरबों मौतें हो चुकी हैं नागपाशा! पृथ्वी की मिट्टी का कोई भी कण ऐसा नहीं होगा! जिसमें मानव अवशेष न मिले हुए हों!
इन इमारतों में भी उस मिट्टी का कुछ न कुछ अंश अवश्य है! और ड्रैकुला के पास उन अवशेषों में प्राण फूंकने की ताकत है! इसको मेरी यांत्रिक शक्ति नहीं रोक सकती! इसको रोक सकती हैं तो सिर्फ नागराज की दैवीय नागशक्तियां!
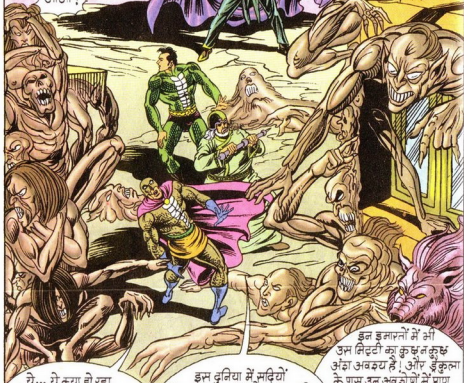
नागराज ने खुद ही ड्रैकुला नाम की मुसीबत को रोकने की ठान ली थी-
बस, ड्रैकुला! बहुत हुआ! रुक जा! वर्ना मैं तुझको ऐसी मौत मारूंगा कि फिर जिन्दा होने के नाम से ही तेरी आत्मा थर-थर कांपने लगे!
जिन्दा होने का सवाल तो तब पैदा होगा जब मैं मरूंगा! अरे, अब तो ड्रैकुला मर ही नहीं सकता! सिर्फ मार सकता है!
अब तुम मानवों के पास ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो ड्रैकुला को रोक सके!
अब जो सौदा नागपाशा मेरे शरीर के ज़रिए तुमसे करना चाहता था वह मैं करता हूं! महानगर को बचाना चाहता है तो घुटने टेक दे! बन जा मेरा गुलाम वैम्पायर!
कभी नहीं!
तुझे मेरा गुलाम तो बनना ही पड़ेगा! मर्जी से बनेगा तो शायद मैं महानगर वासियों को कुछ समय के लिए छोड़ दूं! वर्ना तू भी वैम्पायर बनेगा और पूरा महानगर भी!
ओह! तू गायब हो सकता है! लेकिन मैं तेरी हर शक्ति की बराबरी कर सकता हूं!
देख! तू गायब हो सकता है तो मैं भी अदृश्य हो सकता हूं! और इस रूप में भी तुझ पर वार कर सकता हूं!
आऽऽऽह! इसके वारों में नर्क की आग सी झुलसाहट है! ऐसे में इसके निशाने से नहीं बच सकता!
मुझे दम लेने के लिए इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करना पड़ेगा!

आऽऽऽह! ये अदृश्य होकर भी मुझ पर वार कर सकता है! लेकिन मैं इच्छाधारी रूप में कोई वार नहीं कर सकता! मुझको इसके वारों से बचने का दूसरा रास्ता अपनाना होगा! अपने आकार को छोटा करके नागरूप में आना पड़ेगा!
आहा! कमाल की शक्तियां हैं तुझमें! तू नाग बनकर मेरे वारों को छका रहा है! लेकिन ड्रैकुला तेरी इस शक्ति की बराबरी कर लेगा!
देख मैं चमगादड़ रूप में आ गया! और इस रूप में मैं अपने शिकार की ध्वनि तरंगों की मदद से देख कर वार करता हूं! और ये वार एकदम सटीक होते हैं!
नागराज तेजी से अपने सामान्य रूप में वापस आया-
फच्याक
और चमगादड़ के रूप में ड्रैकुला का नाजुक शरीर इस वार को झेल नहीं पाया-
आऽऽऽह!
अब शायद मुझे इस पर वार करने का मौका मिल सके!
आऽऽऽह! तूने मुझे जाल में फंसा ही लिया नागराज! लेकिन इससे कोई खास फर्क पड़ने वाला नहीं... अरे! मेरे... मेरे शैतान वापस मिट्टी में समा रहे हैं! पर कैसे? कैसे?
क्योंकि मैंने पूरे महानगर को एक ऐसे तिलिस्म में बांध दिया है...

जिसके अंदर तेरी शैतानी शक्तियों को काटने की क्षमता है! अब महानगर में कोई शैतान नहीं बचेगा! जल्दी ही इस तिलिस्मी शक्ति का शिकंजा तुझ तक भी पहुंच जाएगा और तू भी हमेशा के लिए नष्ट हो जाएगा!
वेदाचार्य! आपने महानगर को शैतानों से मुक्त कराकर मेरी एक बड़ी मुसीबत दूर कर दी है!

ड्रैकुला नाम की मुसीबत कभी दूर नहीं होती है! मेरी आंखों में देख नागराज!
नागराज के पास भी तीव्र सम्मोहन शक्ति अवश्य थी-
लेकिन उसके पास ड्रैकुला जितना अनुभव नहीं था-

सभी तमाशा देखते रह गए-
और ड्रैकुला के दांत नागराज की गर्दन में आ गड़े-
जवाब तुरन्त ही सामने आ गया-
मैं... मैं गल रहा हूं! पर क्यों? नागराज मेरे काटने से कैसे बच गया?
ये वैम्पायर क्यों नहीं बना?
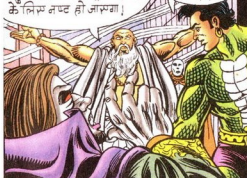
ड्रैकुला के सम्मोहन ने पलभर में नागराज को अपनी गिरफ्त में ले लिया-
अब तू मेरे वश में है! तू अपनी पलकें तक नहीं हिला सकता! सिर्फ खुद को वैम्पायर बनने का तमाशा देख सकता है!
सबकी जबान पर एक ही सवाल मचलने लगा-
नागराज का खून पीकर ड्रैकुला गल जाएगा या ड्रैकुला का दंश नागराज को भी वैम्पायर बना डालेगा-
वह इसलिए ड्रैकुला क्योंकि नागराज एक बार वैम्पायर बनकर ठीक हो चुका है! उसके शरीर ने तुम्हारे प्रति प्रतिरोधक क्षमता बना ली है! लेकिन तुम्हारा शरीर विष के प्रति ऐसा नहीं कर पाया!

लेकिन ये हुआ कैसे? तू पहला इंसान है जिसने वैम्पायर शक्ति से बगैर किसी मदद के मुक्ति पाई है!

ये तो मैं खुद भी नहीं जानता ड्रैकुला!

जानता तो तेरे मरने से पहले तुझको बता जरूर देता।

ड्रैकुला नहीं मरेगा!

नहीं मरेगा ड्रैकुला!

गलते ड्रैकुला के हाथ ने लंबा होकर नागपाशा की गर्दन को थाम लिया-

और ड्रैकुला के दांत नागपाशा की गर्दन में आ धंसे-

ये... ये क्या? ड्रैकुला ने नागपाशा का अमृत मिला खून पी लिया है!

और उसका शरीर फिर से ठोस हो रहा है!

मैं बच गया! मैं बच गया!

ड्रैकुला का आतंक हमेशा के लिए समाप्त हो चुका है!

नहीं वेदाचार्य! उसने अमृत पी लिया है! अब उसको कोई भी शक्ति नष्ट नहीं कर सकती! वह वापस आएगा!

लेकिन तभी-

आऽऽऽह! आऽऽऽह! ये कैसी आंधी है जो मेरे शरीर को कणों में तोड़ रही है! मैं गायब हो रहा हूं!

तिलिस्मी शक्ति तुम तक पहुंच चुकी है, ड्रैकुला! वह तुमको निगल रही है!

और उसको रोकने के लिए हमको पूरी शक्ति लगानी पड़ेगी!

समाप्त।

सच है। ड्रैकुला फिर आएगा। और इस बार होगा ड्रैकुला का अंत।